(1)

B.A. History Hon's, Part-I

Paper: I, Unit-IV, Date: 16.07.2020

Lession: हर्षवर्द्धन

सातवीं सदी में राजनैतिक मंच पर एक बहुत ही वैभवयुक्त आकृति दृष्टिगत हुई। वह आकृति हर्षवर्द्धन की थी। 'मंजुश्री मूलकल्प' तथा 'हर्षचरित' के अनुसार वर्द्धन वंश का संस्थापक पुष्यभूति था जो वैश्य वर्ण का था और जो शैव भक्त था परन्तु हर्ष के अभिलेखों से पता चलता है कि नरवर्द्धन ने करीब पाँचवीं सदी के अंत में तथा छठी सदी के प्रारंभ से वर्द्धन वंश की स्थापना की। उसके बाद राज्यवर्धन हुआ और फिर आदित्यवर्द्धन जिसने कि परवर्ती गुप्त शासक महासेन गुप्त की बहन महासेनगुप्ता का भतीजा था जिसने 'महाराजाधिराज' एवं परमभट्टारक की उपाधियाँ धारण की। उसके समय साम्राज्य का विस्तार हुआ। ऐसा प्रतीत होता है कि उत्तर-पश्चिम सीमाओं पर पंजाब में हुन प्रान्तों द्वारा उसका साम्राज्य सीमित था, उत्तर में संभवतः पहाड़ियों तक फैला हुआ था, पूरब में कन्नौज के मौखरियों की सीमाओं से लगा हुआ था तथा पश्चिम और दक्षिण में पंजाब और राजपूताना मरुस्थल तक फैला हुआ था। 'हर्षचरित' से पता चलता है कि करीब 603 ई० के आस-पास प्रभाकरवर्द्धन ने मालवा के शासक देवगुप्त पर हमला किया था।

प्रभाकरवर्द्धन के बाद उसके बड़े पुत्र राज्यवर्द्धन पर शासन की जिम्मेदारी आयी। राज्यवर्द्धन और उसका छोटा भाई हर्षवर्द्धन अपने पिता के मृत्यु के दुःख को भूला ही नहीं पाये थे कि उन्हें यह समाचार प्राप्त हुआ कि उनके बहनोई ग्रहवर्द्धन को मालवा के शासक देवगुप्त ने मार डाला और उनकी बहिन राज्यश्री को कैद कर लिया।

राज्यवर्द्धन की मृत्यु के बाद अत्यन्त ही भारी हृदय से हर्ष ने (करीब 606 ई० में) शासन की बागडोर सम्भाली। अपनी बहिन को बन्दीगृह से छुड़ाना तथा शशांक से अपने भाई का बदला लेना, गौड़ का अस्तित्व मिटा देना, देश में शांति स्थापित करना उसके प्रमुख उद्देश्य थे।

उपलब्धियाँ: राज्यश्री-प्राप्ति तथा शशांक के विरुद्ध अभियान - राज्यश्री को प्राप्त करने के लिए तथा शशांक से बदला लेने हेतु बिना समय गवाँये तथा विशाल सेना का संगठन कर हर्ष अभियान पर निकला। रास्ते में उसे हंसवेग मिला जो कामरूप के शासक भास्करवर्द्धन का विश्वासनीय दूत था और शशांक के विरुद्ध हर्ष से स्थायी संबंध बनाने हेतु कई कीमती उपहार लाया था। हर्षपूर्वक यह प्रस्ताव स्वीकार किया। शशांक बुद्धिमानीपूर्वक हर्ष से सीधा मुकाबला करने की बजाय कन्नौज छोड़कर भाग गया। गंजम ताम्रपत्रों से भी पता चलता है कि 619 ई० तक शशांक गौरवपूर्वक शासन कर रहा था। मंजुश्री मूलकल्प से पता चलता है कि सोम (शशांक) हकर (हर्ष) ने पूरवर्धन स्थान पर घेरा था और हर्ष ने उसके साम्राज्य पर राज्य करने की छूट दी। उसकी मृत्यु के बाद ही हर्ष ने गौड़ पर अधिकार किया होगा।

कन्नौज की प्राप्ति: कन्नौज में चूँकि कोई शासक नहीं था एवं आन्तरिक गड़बड़ी वहाँ व्याप्त हो गई थी। राज्यश्री शासन भार वहन करना चाहती ही नहीं थी। मंत्री कन्नौज की बागडोर हर्ष को सौंपना चाहते थे। इसलिए ग्रहवर्मा के बाद

हर्ष ने शुरु से ही संकोच किया, किन्तु बोधिसत्व अवलोकितेश्वर की सलाह से वह मान गया। थानेश्वर का स्वामी तो वह था ही और कन्नौज शक्तिशाली साम्राज्यों का शासक हुआ। अपनी स्थिति मजबूत करने के बाद उसने सफलतापूर्वक राज्य चलाने हेतु कन्नौज के भौगोलिक एवं राजनैतिक महत्व ध्यान में रखते हुए अपनी राजधानी उसे (कन्नौज) को बनाया।

वल्लभी पर आक्रमण: हर्षवर्धन के समय वल्लभी एक शक्तिशाली स्वतंत्र साम्राज्य था। लगता है हर्ष ने वहाँ के शासक ध्रुवसेन द्वितीय या ध्रुवपद पर आक्रमण कर विजय प्राप्त की थी। भड़ौच के गुर्जरों के अभिलेखों से पता चलता है कि भड़ौच के शासक दद्द द्वितीय ने वल्लभी के शासक ध्रुवभट्ट पर ध्रुवसेन द्वितीय की हर्ष के विरुद्ध सहायता कर प्रसिद्धि प्राप्त की थी। इससे ऐसा आभास होता है कि पहले हर्ष ने विजय प्राप्त की होगी परन्तु बाद में दूसरे शासकों की मदद से ध्रुवसेन ने हर्ष पर विजय प्राप्त की थी। हर्ष ने राजनैतिक दृष्टिकोण से अपनी लड़की का ब्याह उससे कर दिया।

पुलकेशिन के युद्ध: चूँकि हर्ष और पुलकेशिन दोनों ही शक्तिशाली थे और दोनों ही गुजरात के आनर्त क्षेत्र को अपने अधिकार में रखना चाहते थे इसलिए दोनों में संघर्ष होना स्वाभाविक था। यह भी पता चलता है कि युद्ध में हर्ष की हार हुई।

सिन्ध, नेपाल और कश्मीर पर अभियान: बाण से हमें पता चलता है कि हर्ष ने सिन्ध के राजा को हराकर उससे धन प्राप्त किया। ह्वेनसांग का कहना है कि उसने सिन्ध को एक शक्तिशाली तथा स्वतंत्र राज्य के रूप में देखा था। अतः ऐसा लगता है कि यदि हर्ष का सैनिक अभियान सिन्ध तक पहुँचा भी तो उसका कोई ठोस परिणाम नहीं निकला। बाण के हर्षचरित से यह पता चलता है कि बर्फीले पहाड़ों शायद नेपाल और कश्मीर से भी उसे उपहार मिले थे। परन्तु इस सन्दर्भ की यह व्याख्या भी हो सकती है कि उसने किसी शक्तिशाली घराने की पहाड़ी राजकुमारी से विवाह किया था।

कोंगद, उड़ीसा और मगध पर अधिकार: ह्वेनसांग से पता चलता है कि कोंगद और उड़ीसा पर भी मगध का अधिकार था। परन्तु शशांक की मृत्यु के बाद ही यह संभव हो सका होगा। मगध पर भी उसने बाद में ही कब्जा किया होगा।

हर्ष के साम्राज्य-विस्तार के बारे में कई लोगों ने खूब-बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया है परन्तु समदर्शी दृष्टिकोण यदि अपनाया जाय तो यह कहना होगा कि शुरु में तो हर्ष के साम्राज्य में उसे विरासत में मिले थानेश्वर और कन्नौज के राज्य सम्मिलित थे। बाद में उसने मगध को अपने साम्राज्य में मिलाया तथा उड़ीसा और कोंगद पर भी विजय प्राप्त की।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शांति एवं युद्ध के क्षेत्र में हर्ष ने समान रूप से विशेषता उपलब्ध की। वह एक आदर्श राजनीतिज्ञ और सेनापति के रूप में साहित्य और कला के पोषक रूप में तथा व्यक्तिगत रूप में महान था और इस वजह से उसकी प्रशंसा एवं सराहना करना आवश्यक है।

डॉ० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर